27 अक्टूबर 2015 को अहमदनगर स्थित अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी हाई स्कूल के 125 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित समारोह में माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. ए.ई.एस. हाई स्कूल के 125 वर्ष पूरे होने के अवसर पर अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी द्वारा आयोजित समारोह में शामिल होकर मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है। इस यादगार अवसर पर मुझे यहाँ आमंत्रित करने के लिए मैं सोसाइटी को धन्यवाद देती हूँ।

2. **'सिद्धति भवति कर्मजा (सफलता कर्म से मिलती है)'** को चरितार्थ करती इस संस्था ने 125 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। 125 वर्ष पूरा होना किसी भी संस्था और विशेष रूप से शैक्षिक संस्था जो देश की नियति निर्धारित करती है, के इतिहास में मील का पत्थर होता है। यह अवसर इस संस्था की स्थापना और विकास यात्रा से जुड़े सभी व्यक्तियों के लिए ऐतिहासिक क्षण है। **125 वर्ष अंक ही स्वयं में एक इतिहास है। इस लम्बी समयावधि में, बदलते सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवेश में अपने ध्येय पर लगन, परिश्रम और उत्साह से आगे बढ़ने के कारण ही Ahmednagar Education Society** शिक्षा संस्थाओं में एक अलग नाम और पहचान रखती है। इससे जुड़े सभी सौभाग्यशाली लोगों को मेरा साधुवाद। मैं इस महत्वपूर्ण अवसर पर ए.ई.एस. हाई स्कूल को हार्दिक बधाई देती हूँ। 1880 के दशक में स्थापित अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों

में बच्चों को शिक्षा प्रदान करके समाज के प्रति अमूल्य सेवा प्रदान करने के लिए जानी जाती है। आज जब हम पीछे मुड़ कर उन दिनों की ओर देखते हैं जब **Ahmednagar Education Society** की स्थापना नहीं हुई थी और शैक्षिक संस्थाओं की कमी थी, तो यह उपलब्धि और भी तारीफ़ के काबिल लगती है।

3. शिक्षा हमें सिर्फ साक्षर नहीं करती बल्कि हमें अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सचेत भी करती है। सही रूप में शिक्षित बालक आत्मनिर्भर होकर परिवार, देश और समाज के लिए स्वतः समर्पित हो जाता है। एक उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान बच्चों के जीवन में सही राह दिखाने में अहम भूमिका निभाते हैं। मानव जीवन बहुमूल्य है और शिक्षण संस्थाएं इस जीवन को सही दिशा देती हैं।

4. मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई है कि इस सोसाइटी की छत्रछाया में 14 स्कूल और अधिकतर सेकेंडरी,हायर सेकेंडरी और प्राइमरी स्कूल अहमदनगर में और इसके आसपास लगभग 18500 छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं ।

5. अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और बच्चों में नैतिक और आचरण संबंधी मूल्यों की शिक्षा देने के क्षेत्र में बहुत नाम कमाया है। मैं अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी के प्रबंधकों को शिक्षा के प्रचार-प्रसार में उनके योगदान के लिए बधाई देती हूँ । **यहाँ यह स्मरण करना उपयुक्त होगा कि इस संस्था की स्थापना की प्रेरणा अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी के संस्थापक महादेव गोविन्द रानाडे से मिली।** न्यायमूर्ति रानाडे एक महान विद्वान, जाने-माने समाज सुधारक और

दूरदर्शी नेता थे जिन्होंने शिक्षा और विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा को लोकप्रिय बनाने में बहुत योगदान किया है। वह हमारे राष्ट्रीय नवजागरण के निर्माता थे जिन्होंने हमारे स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया। वह वास्तव में आधुनिक भारत के पथ प्रदर्शक थे ।

6. 1882 में न्यायमूर्ति रानाडे के नेतृत्व में पुणे स्थित सुधारकों के ग्रुप ने लड़कियों के लिए हाई स्कूल की स्थापना करने का निर्णय लिया। 19वीं शताब्दी में भारत में लड़कियों की शिक्षा की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता था और महिलायें अधिकतर घरेलू कामकाज, विशेष रूप से खाना बनाने और बच्चों को पालने में ही व्यस्त रहती थीं। बल्कि बहुत बार तो लड़कियों को स्कूल जाने की अनुमति भी नहीं थी। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में न्यायमूर्ति रानाडे ने हुज़ुर्पागा, पुणे में लड़कियों के लिए स्कूल खोला जो न केवल महाराष्ट्र बल्कि पूरे देश के इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण था।

7. शिक्षा उपलब्ध कराने के अलावा रानाडे हमेशा से ही छात्रों में देशभक्ति की भावना जागृत करना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने स्वदेश के लोगों द्वारा चलाये जा रहे स्वदेशी स्कूलों की स्थापना पर जोर दिया। रानाडे दक्कन एजुकेशन सोसाइटी और फर्गुसन कॉलेज, पुणे से जुड़े थे। यह भारत में पहला ऐसा कॉलेज था जिसमें सभी प्रोफेसर भारतीय थे। रानाडे शिक्षा के माध्यम से भारत को आज़ाद कराना चाहते थे तथा देशभक्ति के मूल्यों की शिक्षा देने के साथ साथ हमारी सभ्यता की विरासत के प्रति सम्मान की भावना भी जगाना चाहते थे। आज जब ए ई एस अपनी स्थापना के 125 वर्ष पूरे होने का समारोह मना रहा है, आइये इस अवसर पर हम न्यायमूर्ति रानाडे के

प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि दें ।

8. हम सब आधुनिक युग में शिक्षा के महत्त्व से भली भांति परिचित हैं । शिक्षा निस्संदेह सबसे बड़ी पूँजी है। मैं संस्कृत का एक श्लोक सुनाना चाहूंगी जो इस प्रकार है :

''न चोरहार्यम् न च राजहार्यन, भ्रातृभाज्यं न च भारकारी ।

व्यये कृते वर्धते एव नित्य, विद्याधनं सर्वधन प्रधानम ।।''

इस श्लोक में कहा गया है कि विद्या धन सबसे बड़ा धन है। इसे न तो चोर चुरा सकते हैं और न ही राजा इसका हरण कर सकते हैं। इसे भाइयों में बांटा नहीं जा सकता पर इसे जितना खर्चो, यह उतना ही बढ़ता है। इसलिए हमें हमेशा सीखते रहना चाहिए, अपना ज्ञान सबके साथ बांटना चाहिए और इसका उपयोग समाज के हित के लिए करना चाहिए।

9. जहाँ तक साक्षरता का संबंध है, हमने बहुत प्रगति की है। निस्संदेह स्थिति उस समय की तुलना में कहीं बेहतर है, जब अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना हुई थी। भारत ने एक निरक्षर देश के रूप में बीसवीं शताब्दी में कदम रखा था। इन दशकों में भारत के कोने-कोने में सरकारी और प्राइवेट दोनों तरह के स्कूलों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है।

10. मेरा मानना है कि इतना ही काफी नहीं है। लड़कियों की शिक्षा की स्थिति में सुधार लाने के लिए और प्रयत्न (efforts) करने होंगे। अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी जैसी एजुकेशन सोसाइटियों को शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए मिलकर प्रयास करने होंगे। **यहां मैं Brigham Young का बहुप्रचलित कथन मैं दोहराना चाहूंगी- If you educate a man; you educate a man; if you educate a women; you educate a generation."**

11. मित्रो, आजादी के समय से ही हम शिक्षा को प्राथमिकता देते आये हैं। विधायी उपायों के अलावा, सरकार सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनेक कार्यक्रम कार्यान्वित कर रही है। **सर्व शिक्षा अभियान** एक ऐसा ही अग्रणी कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त करना और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में लड़कों और लड़कियों तथा सामजिक वर्गों के अंतराल को दूर करना है। यह अभियान महिलाओं को शक्तिसम्पन्न बनाने के लिए अत्यधिक कारगर सिद्ध हो रहा है ।

12. अगस्त 2014 में शुरू किये गए **'पढ़े भारत, बढे भारत' कार्यक्र**म का उद्देश्य प्रारंभिक स्कूली शिक्षा के दौरान पड़ने-लिखने में रूचि जगाना है। माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा शुरू किये गए **'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'** और **'सुकन्या समृद्धि कार्यक्रम'** लड़कियों और उनकी शिक्षा को प्रोत्साहित करने और इस बारे में जागरूकता विकसित करने के लिए उल्लेखनीय कार्यक्रम हैं। सभी शैक्षिक संस्थाओं को लड़कियों को शिक्षित करने की आवश्यकता के बारे में पेरेंट्स और छात्रों को जागरूक बनाने के

प्रयास करने चाहिए।

13. आज हम सब डिजिटल युग में रह रहे हैं। कीबोर्ड और माउस से सेवा प्रदान करने के तौर-तरीके बदल रहे हैं और शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। कंप्यूटर, टेबलेट और स्मार्टफोन स्लेट, पेन और पेंसिलों की जगह ले रहे हैं। छात्रों और अध्यापकों को दूरगामी महत्त्व के इन बदलावों की ओर ध्यान देना चाहिए और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना चाहिए । प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई प्रगति का लाभ उठाने के साथ साथ हमें प्रौद्योगिकी का गुलाम नहीं बनना चाहिए और न ही फेसबुक, ट्विटर या व्हाट्सऐप जैसे सोशल मीडिया से प्रभावित होना चाहिए । तकनीकी का हम दास न बनें, तकनीकी हमारी दास रहे। **शिक्षा और शिक्षण संस्थाएं हमें जीवन में समय के मूल्य को समझना सिखाती हैं। Life is all about time, if you waste time, you waste life. ज़िन्दगी समय का नाम है; अगर आप समय बर्बाद कर रहे हैं तो आप जीवन बर्बाद कर रहे हैं।**

14. छात्रों को कंप्यूटर में गेम खेलने में रूचि हो सकती है लेकिन यह खेल के मैदान में खेलने की जगह नहीं ले सकती । क्योंकि खेल के मैदान में उतरने पर ही तन-मन का विकास होता है। इसलिए बच्चों को खेलों के लिए समय निकालने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए । उन्हें किताबें पढ़ने की आदत भी डालनी चाहिए क्योंकि इससे उनका ज्ञान बढ़ता है और सोच भी विकसित होती है ।

15. शिक्षा का मूल उद्देश्य बच्चों को देश का प्रबुद्ध और जिम्मेदार नागरिक बनाना है। आप सबने यह कहावत तो सुनी ही होगी कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। पढ़ने, लिखने और खेलने के लिए अच्छा स्वास्थ्य आवश्यक है। स्वास्थ्य अच्छा तभी होता है जब हमारे आस-पास साफ़ सफाई हो।

16. पढ़ने-लिखने और शिक्षा प्रदान करने के अलावा छात्रों, अध्यापकों, अभिभावकों और प्रबंधकों को शैक्षिक संस्थाओं को स्वच्छ विद्यालय बनाने के लिए मिलकर प्रयास करने चाहिए। इससे माननीय प्रधान मंत्री द्वारा शुरू किया गया **स्वच्छ भारत अभियान** सफल होगा ।

17. मैं इस बात का भी उल्लेख करना चाहूंगी कि कड़ी मेहनत, ईमानदारी और लगन बहुत जरूरी है। हमारे समाज में गुरु को भगवान के समान माना जाता है। छात्रों को अपने अध्यापकों का आदर-सम्मान करना चाहिए। दूसरी ओर अध्यापको को भी यह बात समझनी चाहिए कि देश का भविष्य छात्रों को प्रदान की जा रही शिक्षा और मूल्यों पर निर्भर करता है। मैं समझती हूँ कि आधुनिक विज्ञान और नैतिक मूल्यों से सम्पन्न मजबूत शैक्षिक प्रणाली से हमें अपने देश को विश्व समुदाय में उचित स्थान दिलाने में मदद मिलेगी।

18. शिक्षा न केवल हमें शक्तिसम्पन्न बनाती है, बल्कि हमें अच्छे और बुरे के बीच भेद करने और सही रास्ते पर चलने के काबिल भी बनाती है । शिक्षा हमें विनम्रता का महत्त्व सिखाती है। उचित ही कहा गया है :

''**विद्या ददाति विनयं विनयाद याति पात्रताम**।

पात्रत्वादनमाप्नोति धनाद्धर्मः ततः सुखम ।।''

शिक्षा से विनय, विनय से पात्रता, पात्रता से समृद्धि, समृद्धि से अच्छे कर्म और अच्छे कर्मों से सुख मिलता है ।

19. पिछले 125 सालों के दौरान अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी इन महान आदर्शों को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत रहा है। इस संस्था के मेधावी छात्रों ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से हमारे देश के सामजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश को समृद्ध किया है। इस सुअवसर पर, मैं प्रबंधकों, शिक्षकों, सहायक स्टाफ, छात्रों और उनके अभिभावकों को इस महान संस्था ए.ई.एस. का भाग होने के लिए बधाई देती हूँ। मैं अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी के प्रबंधकों की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे यहाँ आमंत्रित किया और मैं आप सबके भावी प्रयासों में सफलता की कामना करती हूँ।

धन्यवाद।